

दिनांक 25 फरवरी, 1987

सं० ओ० वि०/कुरु०/13-86/8783.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० कुरुक्षेत्र संग्रहल कोपरेटिव बैंक लि०, कुरुक्षेत्र, के श्रीमन् श्री वेद प्रकाश, पुत्र श्री शोभा राम, गाँव कुमरखा खुर्द, तहसील नरवाना, जिला जीन्द तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले में कोई औद्योगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 3(44)-84-3-अमे, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रीम न्यायालय, श्रीमवाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पचाट तीन मास में देने हेतु निदिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमन् के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री वेद प्रकाश की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं० ओ० वि०/एफ० डी०/67-87/8789.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० यूनीवर्सल कम्पेयर वेल्डिंग लि०, पोस्ट आफिस, अमर नगर, फरोदाबाद के श्रीमन् श्री महेश साहू, पुत्र श्री डोमो साहू, मार्फत हिन्द मजदूर सभा, 21 शहाद चौक, फरोदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इस के बाद लिखित मामले में कोई औद्योगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3अमे 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पठते हुए अधिसूचना सं० 11495-जो-अमे-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रीम न्यायालय, फरोदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पचाट तीन मास में देने हेतु निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमन् के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है।

क्या श्री महेश साहू की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं० ओ० वि०/यमुना/11-87/8796.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० हिन्द मेटल इण्डस्ट्रीज/वर्कर्स हनुमान गेट, जगावरा के श्रीमन् श्री सुरेश चन्द, पुत्र श्री नाथी राम, मार्फत डा० सुरेन्द्र कुमार शर्मा इण्टर्-आफिस, धर्मपाला ब्रह्मग रोड, जगावरा तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले में कोई औद्योगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 3(44)-84-3-अमे, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रीम न्यायालय, श्रीमवाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पचाट तीन मास में देने हेतु निदिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमन् के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री सुरेश चन्द, पुत्र श्री नाथी राम की सेवाओं का समापन/छिड़ती न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

आर० एस० अग्रवाल,

उप-सचिव, हरियाणा सरकार,  
श्रीम विभाग।